निबंध

अनुशासन का महत्व

रुपरेखा :-

- प्रस्तावना
- अनुशासन की आवश्यकता
- छात्र और अनुशासन
- अनुशासनहीनता के कारण
- समाधान हेतु सुझाव
- उपसंहार ।

(1) प्रस्तावना :-

राष्ट्र का निर्माण चट्टानों या वृक्षों से नहीं अपितु श्रेष्ठ नागरिकों के उत्तम चरित्र से होता है। प्रत्येक देश के पतन का कारण अनुशासन हीनता ही बनती है। अनुशासन कोई भय नहीं है बल्कि एक सद्-आचरण माना जाता है। सम्पूर्ण समाज का विकास अनुशासन के द्वारा ही सम्भव है।

(2) अनुशासन की आवश्यकता :-

छात्र जीवन में अनुशासन का सर्वाधिक महत्व होता है। इसके अभाव में प्रकृति द्वारा प्रदान की गयी वस्तुओं का उचित प्रयोग नहीं हो सकता किसी भी देश का नाश व निर्माण उत्थान-पतन छात्रों पर ही निर्भर रहता है और अनुशासित छात्र ही देश की मन वचन व कर्म से सेवा कर सकते हैं।

Gyansindh Coaching Classes

(3) छात्र और अनुशासन :—

आधुनिक युग में छात्रों में बढ़ती अनुशासहीनता के कारण राष्ट्र में चिंता व्याप्त हो गयी है। छात्रों को राष्ट्र के भाग्य विधाता कहा जाता है। हर दिन तोड़-फोड़, शिक्षकों से अनुचित व्यवहार, हड़ताल लूटपाट आदि के समाचार सुनने को मिलते हैं। भविष्य में राष्ट्र का जीवन सुंदर बनाने के लिए अनुशासन का होना अति आवश्यक है।

(4) अनुशासनहीनता के कारण :—

अनुशासनहीनता के अनेक कारण हो सकते हैं, प्रमुख कारण निम्नांकित हैं—

(i) दोषपूर्ण वर्तमान शिक्षा प्रणाली :—

वर्तमान शिक्षा प्रणाली वास्तविक जीवन से दूर होती जा रही है। यह केवल छात्रों को वास्तविकता से अलग व्यावहारिकताहीन जीवन जीना सिखाती है।

(ii) शिक्षकों का पतन :—

उच्च स्थान पाने वाले शिक्षक आज अपनी गरिमा खोते जा रहे हैं, जिसके चलते छात्रों में अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है।

(iii) विद्यालयों में अनैतिक कार्य :—

विद्यालयों में अनेक अनैतिक एवं अनुचित कार्य किए जाते हैं, जिनसे छात्रों में असंतोष की भावना विकसित होती है।

छात्रों से शुल्क के नाम पर अधिक पैसे लेना, शिक्षकों की गुटबंदी आदि छात्रों के व्यवहार व अनुशासन में परिवर्तन ला देते हैं।

(iv) शिक्षा का व्यावसायिक न होना :—

अनेक छात्र डिग्रियाँ लेकर बेकार घूम रहे हैं, शिक्षित होकर भी रोजगार न पाने से छात्रों में असंतोष व अनुशासनहीनता का जन्म होता है।

(v) धार्मिक व नैतिक शिक्षा का अभाव तथा अभिभावकों की कमी :—

आजकल धार्मिकता व नैतिकता क्षीण होती जा रही है साथ ही अनुशासन भी। इसमें कुछ कमी शिक्षकों की तथा कुछ अभिभावकों की भी रहती है।

(5) समाधान हेतु सुझाव :—

अनुशासन की समस्या के समाधान के लिए निम्नलिखित सुझाव हो सकते हैं—

(i) शिक्षा का गुणात्मक विकास किया जाए। विद्यालयों की संख्या वृद्धि के साथ-साथ उसके साधनों में भी वृद्धि की जाए।

(ii) शिक्षा में सुधार हेतु उचित कदम उठाए जाएँ। अनुशासनहीनता का एक ही उपचार है संस्कारपूर्ण एवं व्यावहारिक शिक्षा।

(iii) परीक्षा प्रणाली में यथोचित सुधार किया जाए।

(iv) अध्यापकों के व्यवहार एवं आचरण में सुधार किया जाए।

(v) धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की व्यवस्था की जाए।

(vi) विद्यालयों में उचित वातावरण एवं सृजनात्मक क्रियाओं में सुधार हो।

(vii) छात्रों में समुचित नैतिकता एवं संस्कारपूर्ण राजनीति का भी ज्ञान कराया जाए।

(6) उपसंहार :—

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि यदि इन उपायों को क्रियान्वित करते हुए शिक्षा-व्यवस्था में सुधार किया जाए तो छात्रों में व्याप्त अनुशासनहीनता समाप्त हो सकेगी।